Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2022, VOL- 10/74

राष्ट्रकवि दिनकर के साहितय की स्वाधीनता आन्दोलन में भूमिका

डॉ राधेश्याम

हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय गौंडा, अलीगढ़

Abstract

दिनकर ने जिस समय हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया वह राष्ट्रीय जागृति का युग था। उस समय भारतीय जनता 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' और महात्मा गांधी के राष्ट्र मुक्ति आंदोलन से प्रभावित हो चुकी थी। भारत की जनता अंग्रेजी शासन सत्ता से छुटकारा पाने के लिए बेचैन हो रही थी। ऐसे समय में राष्ट्रकवि दिनकर ने अन्य तत्कालीन कवियों को साथ लेकर अपनी ओजस्वी वाणी में सोए हुए भारतीयों को जागृत किया। दिनकर के साहित्य का राश्ट्रीय जागरण के संदर्भ में विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि इनके गीतों में शामिल वंदना गीत, बलिदान गीत, झंडा गीत आदि सभी में राष्ट्रीय जन जागरण का संदेश किसी ना किसी रूप में विद्यमान है। राष्ट्रीय भावना में पूंजीवाद के दुष्प्रभाव का वर्णन कवि ने किया है। राष्ट्रीय एकात्मकता के भाव की जागृति के लिए कवि ने भारतीय महापुरुषों तथा भारत की भौगोलिक एकता का उदाहरण दिया है। शहीदों के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति जागृति लाने का कार्य दिनकर जी ने अच्छे से किया है। भारत के जनमानस में जागरण लाने के लिए उन्होंने भारत के अतीत के गौरव, पराक्रम, शौर्य, संपन्नता आदि का स्मरण अपने साहित्य में किया है।

Keywords: *जन जागरण,*

विवेचनाः दिनकर ने जिस समय हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया वह राष्ट्रीय जागृति का युग था। उस समय भारतीय जनता 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' और महात्मा गांधी के राष्ट्र मुक्ति आंदोलन से प्रभावित हो चुकी थी। भारत की जनता अंग्रेजी शासन सत्ता से छुटकारा पाने के लिए बेचैन हो रही थी। ऐसे समय में राष्ट्रकवि दिनकर ने अन्य तत्कालीन कवियों को साथ लेकर अपनी ओजस्वी वाणी में सोए हुए भारतीयों को उद्बुद्ध करने में सहयोग दिया। दिनकर ने अपने काव्य में तत्कालीन समय की भारतीय जनता के क्रोध, आक्रोश, अधीरता और बेचैनियों का सबल प्रकाशन किया है, इसलिए उनकी कविताएं जनसमुदाय को आंदोलित करने की शक्ति रखती हैं। दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चिंतन घुलमिल गए हैं। उन्होंने सांस्कृतिक विचार धारा को अपनी राष्ट्रीयता के घोल में मिला दिया है। कला एवं साज–सजावट उनके कार्य का आधार नहीं है बल्कि पौरुष एवं ओज उनके काव्य के मुख्य उपादान हैं। उनकी कविता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय भावना की सच्चाई एवं तीव्रता है। दिनकर जी ने जब वर्तमान भारत की शक्ति का विघटन ओर मानवीय मूल्यों को गिरते हुए देखा तो उन्हें बड़ा दुख हुआ। इस विषमता को देखकर ही उनकी कविताओं में सेवदनात्मक तीव्रता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जन चेतना के पक्षधर रामधारी सिंह 'दिनकर' का आगमन हिंदी साहित्य में जिस समय हुआ उस समय देश में अंग्रेजी हुकूमत का शासन चल रहा था। अंग्रेज सरकार भारतीय जनता का शोषण कर रही थी। भारत की सामाजिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गई थी। भारत के जमीदार तथा कुछ अन्य भारतीय अंग्रेजों से मिलकर

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अपना स्वार्थ पूरा करने में लगे हुए थे। अंग्रेज अधिकारी इनके सहयोग से प्रत्येक भारतीय की पूरी जानकारी प्राप्त कर लेते थे। जब महाकवि दिनकर का ध्यान इस तरफ गया तो उनका आंतरिक हृदय गरीबों, शोषितों तथा देश के प्रति कुछ करने के लिए बेचैन हो उठा। इसलिए उन्होंने अपनी साहित्य साधना द्वारा भारतीय जनता को एक नई दिषा दिखाते हुए उन्हें आग ने का प्रयास किया। निःसंदेह दिनकर जी इस दिशा में सफल भी रहे हैं। दिनकर ने अपने साहित्य में कुछ ऐसी विशेषताओं का उल्लेख किया है जो जन जागरण के लिए सहायक साबित किए हैं। ऐसी विशेषताओं में शोषित वर्ग की परेशानियों का मार्मिक चित्रण, जाति–पाति, ऊँच–नीच, छुआछूत की भावना का विरोध, नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण, मजदूर तथा कृशक वर्ग के प्रति सहानुभूति की भावना, भारत के अतीत का गौरव–गान आदि प्रमुख है। 'जन जागरण' एक व्यापाक शब्द है जो 'जन' तथा 'जागरण' दोनों को अपने में समेटे हुए है। पर स्पष्ट है कि दिनकर का साहित्य तत्कालीन भारतीय जनता को आलस्य एवं अकर्मण्यता से दूर करके ऊर्जा एवं ताजगी के साथ आगे बढ़ने को प्रेरित किया। सांस्कृतिक दृष्टिकोण आदि ऐसे तत्व हैं जो दिनकर को अन्य परंपरावादी कवियों से अलग श्रेणी में स्थापित करते हैं। दिनकर भारतीय संस्कृत के उद्दात्त स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि – हमारी संस्कृति में बताया गया है कि सच्चा मनुष्य वही है जो अपने लिए न जीकर दूसरे मनुष्य के लिए जिये। कवि मनुष्य को भाग्य की बजाय कर्म में विश्वास करने की सलाह देते हैं। उनके मतानुसार भाग्यवान मनुष्य को निष्कामी एवं पलायनवादी बना देता है। उनका विश्वास है कि मनुष्य कर्म के आधार पर ही इस पृथ्वी से पाप एवं बुराइयों को नष्ट करके उसे स्वर्ग बना सकता है। कवि देश को आगे ले जाने के लिए सभी तरह की विषमता दूर करके समता आधारित एक आदर्श समाज की स्थापना पर बल देता है। वह भारतीय जन को प्रोत्साहित करते हैं कि उनके पास भुजबल है, प्रज्ञा है और सामर्थ्य है। उन्हें दीनों की सहायता करके अपनी शक्तियों का सही दिशा में उपयोग करके जीवन के अंधकार को हमेशा के लिए नष्ट करना है। दिनकर राष्ट्रीयता, मानवता, प्रेम तथा क्रांति के गायक हैं। उनके साहित्य में राष्ट्रव्यापी जागरण का स्वर मुख्य रूप से पाया जाता है। वह ऐसे साहित्यकार हैं जो देश की वर्तमान परिस्थितियों से क्षुब्ध तो हैं लेकिन अपने अतीत के गौरव का गुणगान करने से कभी पीछे नहीं हट्ते हैं। उनके मन में भारत देष के प्राचीन गौरव के प्रति अटूट श्रद्धा एवं लगाव है। कवि को पूर्ण विश्वास है कि जिस भारत भूमि के लिए लोगों ने अपना सब कुछ समर्पित कर दिया, अपना बलिदान करने से भी पीछे नहीं रहे, उस देश में एक न एक दिन स्वतंत्रता का फूल अवश्य खिलकर रहेगा। वस्तुतः दिनकर संवेदनशील कवि के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक उत्थान–पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर साहित्य सृजन किया है। उनकी कविताएं देश की संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, भाशा तथा आदर्श की एकता की आधारभूमि प्रस्तुत करती हैं। कवि दिनकर ने अपने साहित्यिक जीवन में भारत के दो अलग–अलग रूपों का साक्षात्कार किया। एक तो स्वतंत्रता के पहले का भारत और दूसरा स्वतंत्रता के

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बाद का भारत। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत शक्ति संपन्न था। उसे विश्व में आदर सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था, लेकिन अंग्रेजों ने भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को बदलकर भारत की परिस्थितियां विपरीत कर डाली। अंग्रेजों से पूर्व मुसलमानों ने भारत भूमि पर अधिकार किया और लूटपाट कर भारत को कंगाल बना दिया लेकिन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को ज्यादा प्रभावित नहीं कर सके। मुस्लिम आक्रमणकारियों के विपरीत अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को अंग्रेजी रंग में रंगने का प्रयत्न किया। अंग्रेजों ने कूटनीति का सहारा लेकर हिंदू और मुसलमान को आपस में बांट दिया और आराम से भारत की शासन सत्ता पर अधिकार कर लिया। जब द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ तो अंग्रेजों ने भारतीय नेताओं की इच्छा और अनुमति के बगैर भारत को युद्ध में शामिल होने की घोषणा कर दी। सन 1947 ईस्वी में अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिलने तथा अलग से पाकिस्तान देश बन जाने के बाद भारत अपनी आंतरिक समस्याओं को सुलझाने में लगा हुआ था। इसी बीच चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। चीन के बाद भारत को पाकिस्तान के साथ भी युद्ध करना पड़ा जिससे भारत की संपूर्ण अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई। ऐसी विषम परिस्थितियों में भारत उन्नति करने के बजाय अवनति के मार्ग पर पहुँच रहा था। उन्हें आगे बढ़ने के लिये संपूर्ण अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई। ऐसी विपरीत परिस्थिति में हिंदी साहित्य संसार में रामधारी सिंह 'दिनकर' का अवतरण हुआ। इतना सब कुछ होने के बाद भी दिनकर अपने देश के गौरव एवं मान–सम्मान के लिए प्रतिबद्ध थे। वह कहते हैं कि देश–विदेश में भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरव एवं मान मर्यादा आज भी विद्यमान है –

''दीपित देश–विदेश अभी भी,
विभा विमल है शेष अभी भी।''

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में मर मिटने वाले लोगों को कवि याद करता है और बताता है कि उन्ही की बदौलत हम आज स्वतंत्र हैं और चैन की नींद सो रहे हैं –

''कई वर्ष उससे पहले जब देश हुआ स्वाधीन
लहू जवानों की पीती थी भारत में संगीन।''

कवि अपने स्वर में नवयुवकों को सचेत करते हुए उन्हें एक सबल संदेश देता है–

''भुजाओं पर मही का भार फूलों–सा उठाए जा,
कंपाए जा गगन को, इंद्र का आसन हिलाए जा
जहां में एक ही है रोशनी, वह नाम की तेरे
जमीं को एक तेरी आग का आधार है साथी।''

'कुरुक्षेत्र' लिखने के बाद दिनकर ने 'रश्मिरथी' लिख कर एक बार फिर तत्कालीन ज्वलंत सामाजिक प्रष्नों को उठाया। उन्होंने इस तरह के कार्य करके युगबोध को स्वर प्रदान किया। हिंदी साहित्य जगत में दिनकर ऐसे प्रकाश पुंज की तरह है जो साधारण मानव की जिंदगी के साथ हो जाते हैं और साथ रहकर ही जिंदगी की बात करते हैं। उन्होंने अपने प्रकाश से संपूर्ण भारत के समाज को आलोकित किया।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रामधारी सिंह 'दिनकर' जब हिंदी साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए प्रयासरत थे तब देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। राष्ट्र की अस्मिता चौराहों पर नंगी हो रही थी और जनमानस किसी द्वंद से ग्रसित हो गया था। ऐसी परिस्थिति में भला दिनकर जी चुपचाप एवं शांति से कैसे बैठ सकते थे? इन्हीं विषयों पर लगातार चिंतन करके और इन विषयों पर कविताएं लिखने से दिनकर में राष्ट्रीय भावनाओं का उदय हुआ। दिनकर में यह राष्ट्रीय भावना कहीं परिस्थिति से आवेष्टित दिखाई देती है तो कहीं पर राष्ट्रीय उत्थान की कल्पना से ओतप्रोत दिखाई देती है। राष्ट्रीयता किसी देश की अस्मिता से जुड़ी होती है। जन जागरण भी राष्ट्रीयता में मुखरित होता रहता है। वास्तव में दिनकर ने अपनी काव्य रचना से सामान्य जनमानस को प्रभावित किया है। उन्होंने राष्ट्रीयता की ओजमयी वाणी में धरती–पुत्र को जागरण का संदेश दिया है। दिनकर की रचनाओं में उनके समकालीन छोटे–छोटे कवियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव देखा जा सकता है। वह तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित दिखाई देते हैं। उस समय देश पराधीनता की आग में जल रहा था। अंग्रेज भारतीयों के खिलाफ दमन–चक्र की नीति चला रहे थे। भारतीय अपने को असहज महसूस कर रहे थे। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उन्हें आगे बढ़ने और ऊपर उठाने वाला कोई दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में दिनकर की रचनाओं में क्रांतिकारी स्वर उभरने लगे। उन्होंने राष्ट्रीयता का प्रचार–प्रसार करके देश के लोगों को जागृत करने का कार्य किया। कुछ विद्वान मानते हैं कि दिनकर जन जागरण के कवि तो है लेकिन उन्होंने राष्ट्रीयता के लिए जन जागरण का जो कार्य किया वह मात्र उनके कवित्व–कर्म को ही नही दिखाता बल्कि उनकी आत्मा से किया गया कार्य है। वह गुलामी के समय देश के प्रति प्रेम दिखाने के लिए किया गया राष्ट्रीय धर्म है। सन् 1962 ईस्वी में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तब दिनकर जी के समस्त व्यक्तित्व पर राष्ट्रीयता वज्र की भांति उभर कर आई। 'हुँकार' काव्य संग्रह के माध्यम से कवि ने एक तरफ अपना विरोध भी दर्ज करवाया है। दिनकर ने अपने राष्ट्रीयता के उदात्त स्वर में सामाजिक विषमता का नग्न चित्र प्रस्तुत करके हमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों से अवगत कराया है। 'सामधेनी' कविता में दिनकर का युगीन स्वर मुखरित हुआ है। इस कविता में राश्ट्रीय परिस्थितियों के प्रति अत्यंत सजग होते हुए भी अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को भी दिनकर जी स्वीकार करते हैं। यह कविताएं उस समय लिखी गई जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर युद्ध का खतरा मंडरा रहा था और भारत अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के प्रयास में लगा हुआ था। इस राष्ट्रीय संग्राम के यज्ञ में दिनकर की रचनाओं ने समिधा की तरह कार्य किया। उनकी कविताओं ने यज्ञ की अग्नि को तेज करने में कोई कसर नही छोड़ी। दिनकर ने एक सफल युग–द्रष्टा साहित्यकार माने जाते हैं। इनका जीवन सबल कर्मवाद युक्तियो है। वह देश के नवयुवकों को इसी कर्मवाद से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में कूदने का आह्वान करते हैं। कवि अपने स्वर में नवयुवकों को सचेत करते हुए उन्हें एक सबल संदेष देता है– ''भुजाओं पर मही का भार फूलों–सा उठाए जा, कंपाए जा गगन को, इंद्र

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

का आसन हिलाए जा जहां में एक ही है रोशनी, वह नाम की तेरे जमीं को एक तेरी आग का आधार है साथी।'' 'कुरुक्षेत्र' लिखने के बाद दिनकर ने 'रश्मिरथी' लिख कर एक बार फिर तत्कालीन ज्वलंत सामाजिक प्रश्नों को उठाया। उन्होंने इस तरह के कार्य करके युगबोध को स्वर प्रदान किया। हिंदी साहित्य जगत में दिनकर ऐसे प्रकाश पुंज की तरह है जो साधारण मानव की जिंदगी के साथ हो जाते हैं और साथ रहकर ही जिंदगी की बात करते हैं। उन्होंने अपने प्रकाश से संपूर्ण भारत के समाज को आलोकित किया। जन जागरण के साथ–साथ ओज, शौर्य, प्रेम और सौंदर्य जैसे तत्व एक साथ उनके काव्य में अपना साकार रूप ले लेते हैं। दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का स्तर काफी मुखरित हुआ है। जब यह सामाजिक चेतना के रूप में उपस्थित होता है तो कवि का स्वर और तेज हो जाता है–

''हटो व्योम के मेघ, पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं
दूध, दूध ओ वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं।''

निष्कर्षः राष्ट्रकवि दिनकर की सबसे बड़ी खूबी थी कि वह हर प्रकार के अंधकार या गलत कार्य के खिलाफ थे। उनकी चेतना या संवेदना का परिणाम है कि कई अलग–अलग छोटे–छोटे बिंदु परस्पर मिलकर एक हो जाते हैं और सिंधु का रूप ले लेते हैं। उनकी काव्य चेतना अपने समय की ज्वलंत मुद्दों की आंख में आंख डालकर मजबूती व दृढ़ता से बात करने की क्षमता रखती है। दिनकर का साहित्य हिंदी के श्रेष्ठ कवियों की रचनाओं में शामिल होने का अधिकार रखता है। उन्होंने एक सच्चे कलाकार की भांति अपना संपूर्ण जीवन साहित्य की सेवा में लगा दिया। उन्होंने मानवतावाद का समर्थन किया इसलिए इन्हें जनवादी कवि के रूप में देखा जाता है। दिनकर के साहित्य का राष्ट्रीय जागरण के संदर्भ में विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि इनके गीतों में शामिल वंदना गीत, बलिदान गीत, झंडा गीत आदि सभी में राष्ट्रीय जन जागरण का संदेश किसी ना किसी रूप में विद्यमान है।

संदर्भः

डॉ. श्रीकृष्ण – आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2006
कालिया, ममता – एक पत्नी के नोट्स, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2007
वर्मा, महादेवी– श्रृंखला की कड़ियाँ, भारती भंडार, इलाहाबाद, 2007
राय, गोपाल– हिंदी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
डॉ रुबी–शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व, मोहित पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2009
देसाई, शिवाकांत– आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश में उपन्यास, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, 2012
सिंह, नामदेव – कहानीः नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
मानधन, धनराज–कामकाजी नारीः मानवीय संबंधों का विघटन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2013

पत्र–पत्रिकाएँ :

मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, विजयराम, राजीव नगर (बेंगलुरु), 1997
लोकयज्ञ, सोनवणे, सिंधु पुष्प बीड़, फरवरी, 2002
समाजकल्याण, नानकचंद, केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड, दिल्ली, 2007

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

परिशिष्ट 3–कोष :
बृहद हिंदी कोष, प्रसाद, कालिका, दिल्ली, 1985
मानविकी पारिभाषिक कोष (साहित्य खंड), डॉ नगेंद्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1965 3. आधुनिक हिंदी शब्दकोश, चातक, गोविंद, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies